[Total No. of Printed Pages : 4] अनुक्रमांक.....

MASL - 204

नाटक एवं नाटिका

एम.ए. संस्कृत (एमएएसएल-12/16/17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2020

समय : 2 घंटे पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है। जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल कीजिए।

खण्ड-'क'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड-'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×20=40)

1. 'मृच्छकटिकम्' नाटक एवं 'रत्नावली' नाटिका में राजा के उदात्त भावों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

2. 'मृच्छकटिकम्' नाटक के प्रथम व द्वितीय अंक की कथा का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3. निम्नलिखित श्लोक में से किन्हीं **दो** श्लोकों की व्याख्या कीजिए:

(क) अवन्तिपुर्य्यां द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः।
गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना।।

(ख) गर्जन्ति शैलशिखरेषु विलम्बिबिम्बा
मेघा वियुक्तवनिताहृदयानुकाराः।
येषां रवेण सहसोत्पतितैर्मयूरैः
खं वीज्यते मणिमयैरिवतालवृन्तैः।।

(ग) उदयति हि शशाङ्कः कामिनीगण्डपाण्डु
र्ग्रहगणपरिवारो राजमार्गप्रदीपः।
तिमिरनिकरमध्ये रश्मयो यस्य गौराः
स्रुतजल इव पङ्के क्षीरधाराः पतन्ति।।

4. निम्नलिखित श्लोक में से किन्हीं **दो** श्लोकों की व्याख्या कीजिए:

(क) य आत्मबलं ज्ञात्वा भारं तुलितं वहति मनुष्यः।
तस्य स्खलनं न जायते न च कान्तारगतो विपद्यते।।

(ख) पद्मव्याकोशं भास्करं बालचन्द,
वापी-विस्तीर्ण स्वस्तिकं पूर्णकुम्भम्।
तत् कस्मिन् देशे दर्शयाम्यात्मशिल्पं,
दृष्ट्वा श्वो यं यद्विस्मयं यान्ति पौराः।।

(ग) शिखा प्रदीपस्य सुवर्णपिञ्जरा,

महीतले सन्धिमुखेन निर्गता।

विभाति पर्यन्ततमःसमावृता,

सुवर्णरेखेव कषे निवेशिता।।

5. निम्नलिखित श्लोक में से किन्हीं **दो** श्लोकों की व्याख्या कीजिए:

(क) यः कश्चित्त्वरितगतिर्निरीक्षते मां

सम्भ्रान्तं द्रुतमुपसर्पति स्थितं वा

तं सर्वं तुलयति दूषितोऽन्तरात्मा

स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः।।

(ख) दीनानां कल्पवृक्षः स्वगुणफलनतः सज्जनानां कुटुम्बी
आदर्शः शिक्षितानां सुचरितनिकषः शीलवेलासमुद्रः।
सत्कर्त्ता नावमन्ता पुरुषगुणनिधिर्दक्षिणो दारसत्त्वो
ह्येकः श्लाघ्यः स जीवत्यधिकगुणतया

चोच्छ्वसन्तीव चान्ये।।

(ग) उदयति हि शशाङ्कः कामिनीगण्डपाण्डु

र्ग्रहगणपरिवारो राजमार्गप्रदीपः।

तिमिरनिकरमध्ये रश्मयो यस्य गौराः

स्रुतजल इव पङ्के क्षीरधाराः पतन्ति।।

खण्ड-ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड-'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×10=40)

1. 'मृच्छकटिकम्' के कर्ता का परिचय पर प्रकाश डालिए।
2. 'मृच्छकटिकम्' के रचनाकाल पर प्रकाश डालिए।
3. 'मृच्छकटिकम्' के पंचम अंक की कथा का वर्णन कीजिए।
4. 'रत्नावली' के अनुसार स्त्रीपात्रों का चरित्र-चित्रण स्पष्ट कीजिए।
5. 'रत्नावली' के रचयिता का व्यक्तित्व वर्णन कीजिए।
6. 'रत्नावली' के द्वितीय अंक का कथासार लिखिए।
7. 'रत्नावली' के प्रथम व द्वितीय अंक में प्रयुक्त छन्दों का विवेचन कीजिए।
8. नाटक एवं नाटिका में भेद स्पष्ट करते हुए उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

****